UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

🎯JRF का जलवा 🔥🏆

दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-40

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

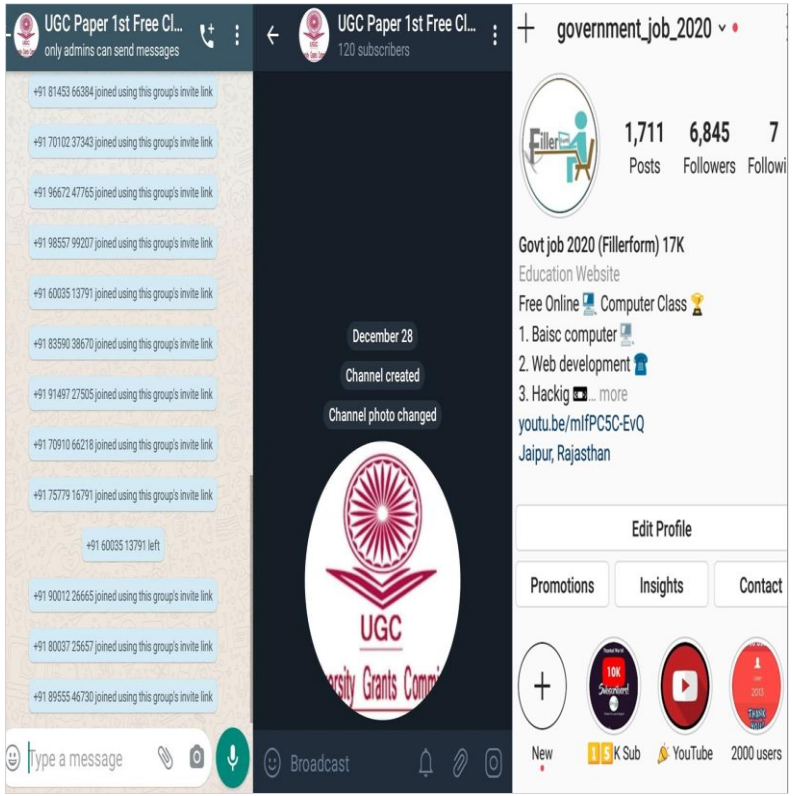
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
December 28
Channel created
Channel photo changed
Type a message
Broadcast
New
K Sub
YouTube
2000 users

Filler Form
LATEST UPLOADS
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
11:00 AM Level Of Teaching | Teaching
LEARNING MATERIAL
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% OFF
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

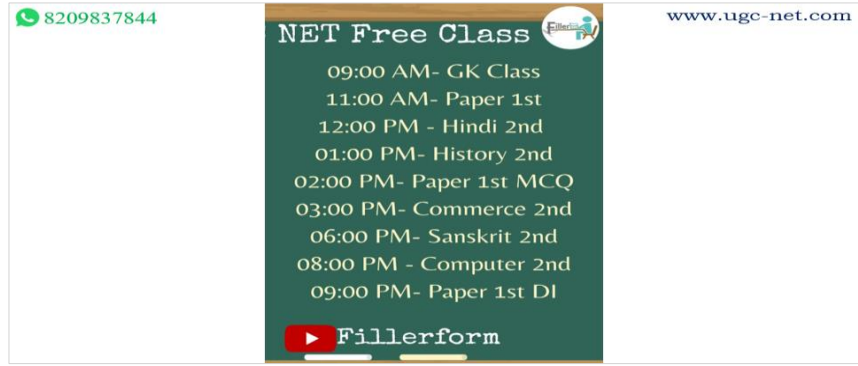
8209837844
NET Free Class
www.ugc-net.com
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
08:00 PM - Computer 2nd
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

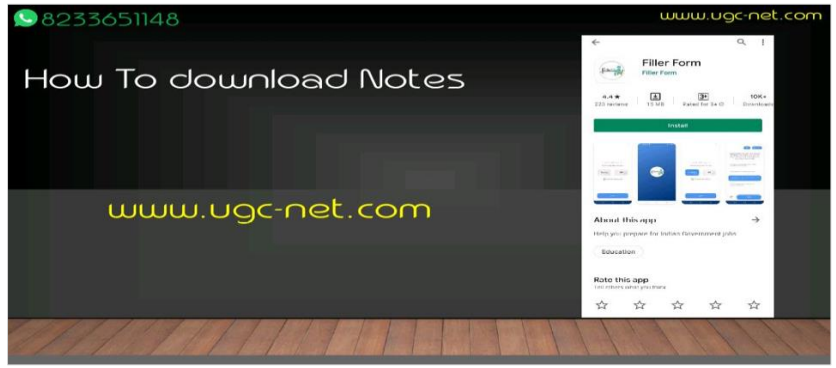
8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

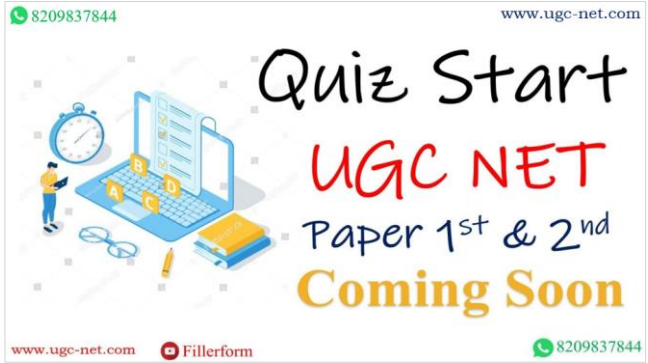
8209837844
www.ugc-net.com
Quiz Start
UGC NET
Paper 1st & 2nd
Coming Soon
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC NET PAPER = SANSKRIT...
JRF का जलवा
27 th march 2022
Google Meet
Time = 6 pm
NIDHU CHAUDHARY
B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

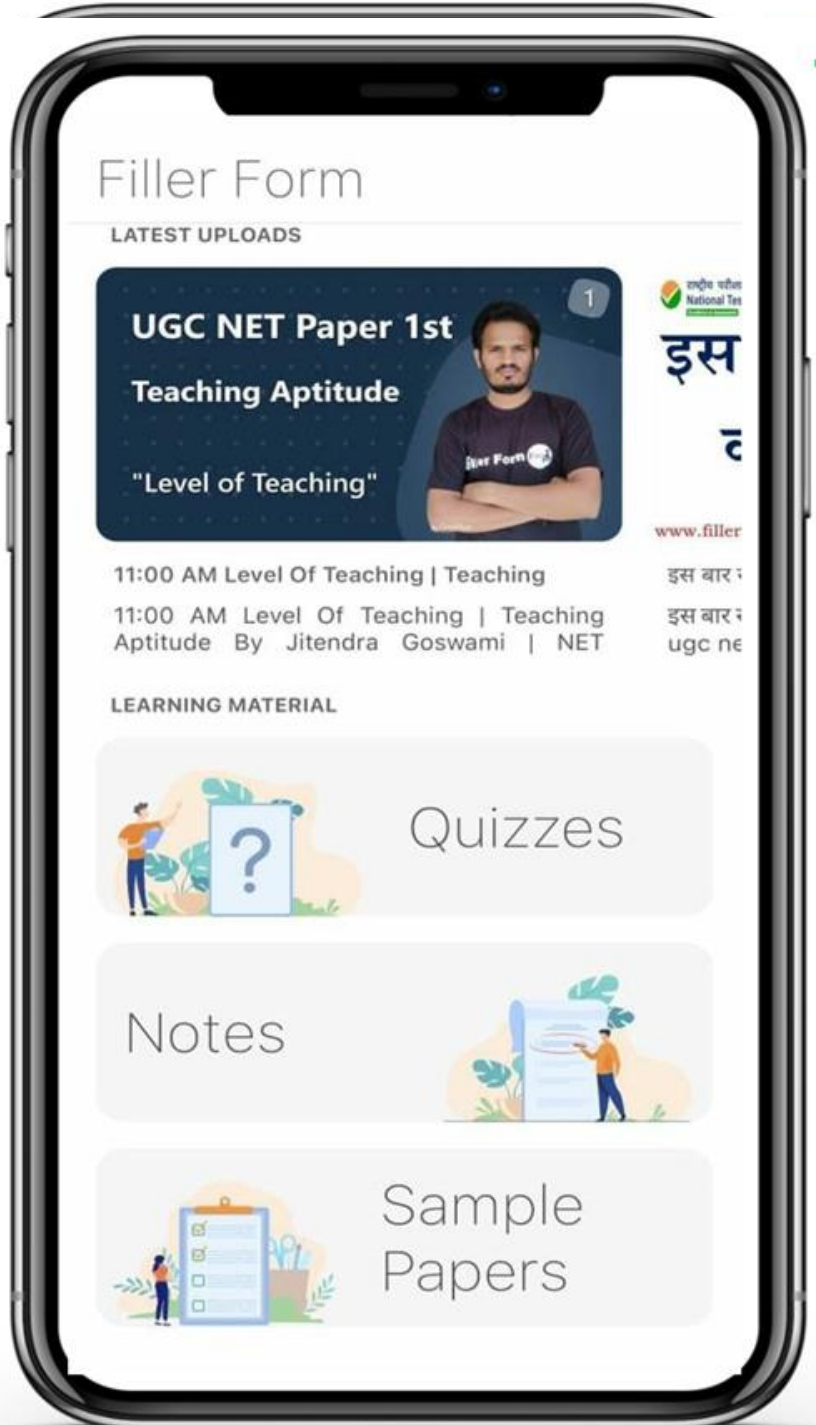

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

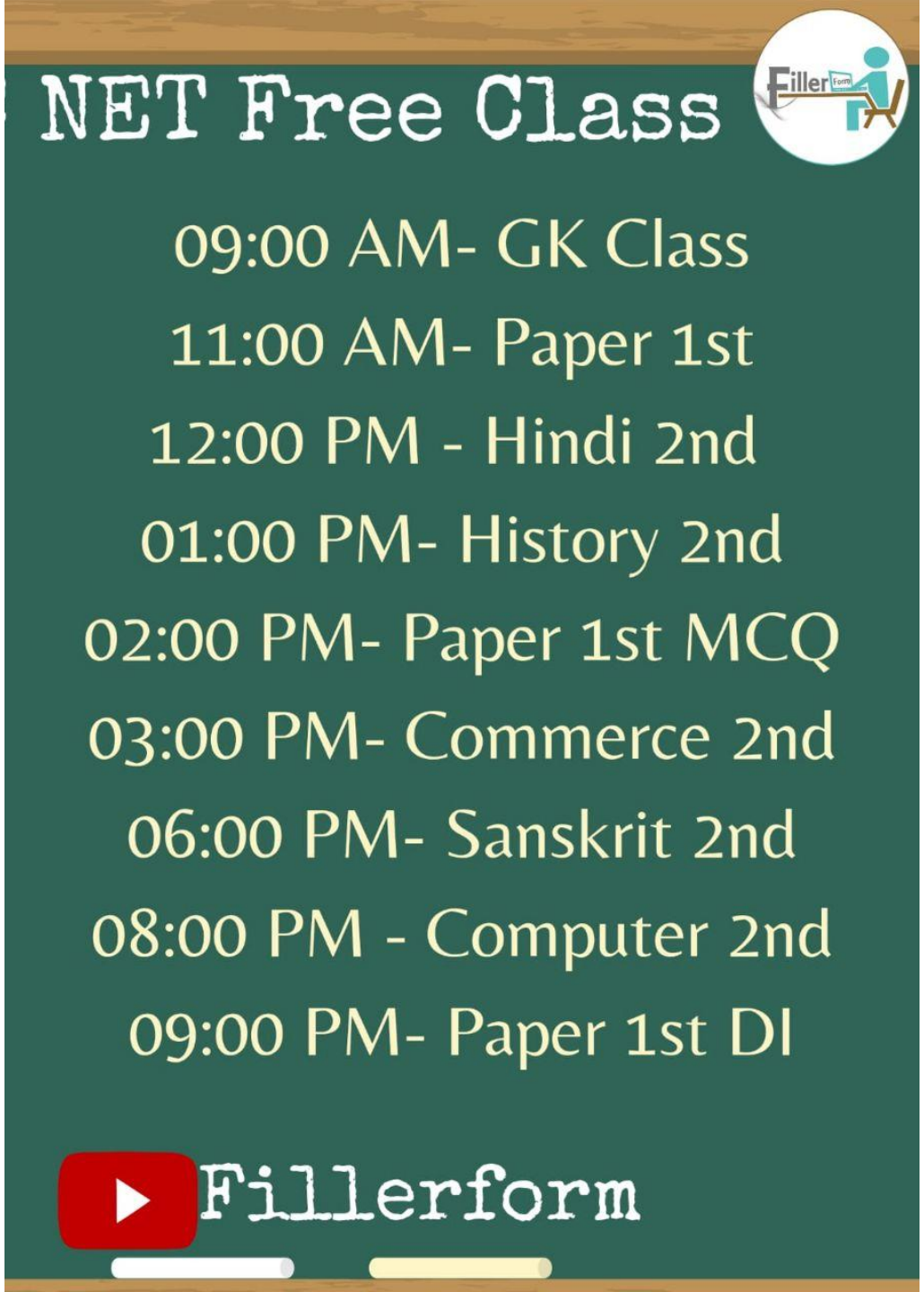

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

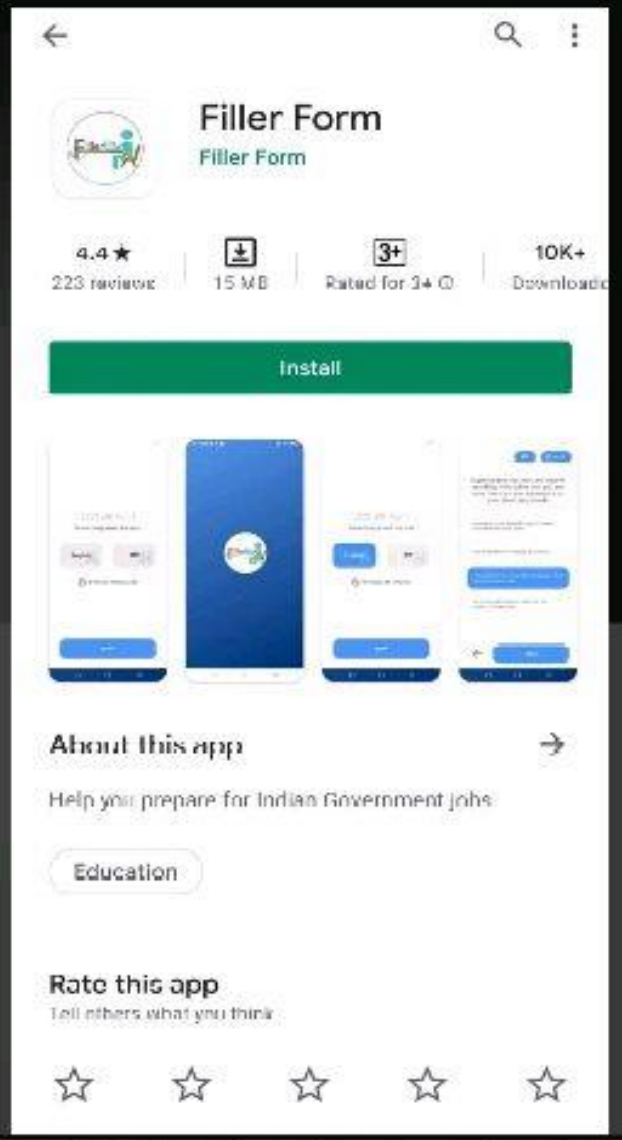

UGC NET PAPER = SANSKRIT...

🎯JRF का जलवा 🔥 🏆

27 th march 2022

Google Meet

Time = 6 pm

NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

Quiz Start

UGC NET

Paper 1st & 2nd

Coming Soon

Home work Answer.....

1. योगदर्शनस्य प्रवर्तकोऽस्ति-

(A) पाणिनि (B) पतञ्जलि

(C) कपिल (D) कणाद

2. योगसूत्रस्य कर्ता अस्ति-

(A) कपिल (B) गौतम

(C) पतञ्जलि (D) जैमिनि

Today's Topic...

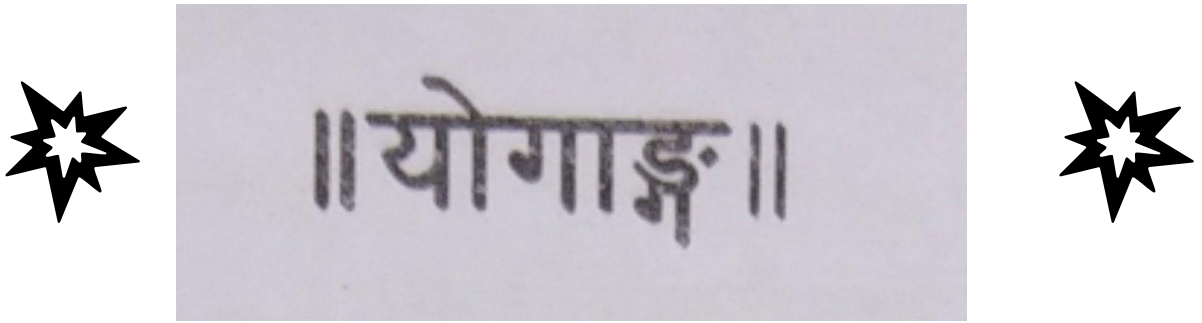

8209837844 www.ugc-net.com

॥योगाङ्ग॥

"यमनियमाऽऽसनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावङ्गानि"।

योगाङ्ग आठ हैं-

1. यम
2. नियम
3. आसन
4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि ।

बाह्याङ्ग- **पाँच** । अन्तरङ्ग- **तीन** ।

8209837844

www.ugc-net.com

(1) यम

"अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः"।

यम पाँच हैं-

1. अहिंसा 2. सत्य 3. अस्तेय 4. ब्रह्मचर्य 5. अपरिग्रह ।

1. **अहिंसा-** **'अहिंसा सर्वथा सर्वदा सर्वभूतानामनभिद्रोहः'**। अहिंसा सर्वथा हमेशा सभी भूतों के प्रति अनभिद्रोह है ।

2. **सत्य-** **"सत्यं यथार्थे वाङ्मनसे"**। अर्थात् जिस प्रकार दृष्ट, अनुमित अथवा श्रुत हुआ है, उसी प्रकार मन में चिंतन और वाक्य में कथन सत्य कहलाता है ।

3. **अस्तेय-** **"स्तेयमशास्त्रपूर्वकं द्रव्याणां परतः स्वीकरणम्। तत्प्रतिषेधः पुनरस्पृहारूपमस्तेयमिति"**। अशास्त्रपूर्वक अवैधरूप से किसी दूसरे की वस्तु न लेना अस्तेय है ।

4. **ब्रह्मचर्यम्-** **"ब्रह्मचर्यं गुप्तेन्द्रियस्योपस्थस्य संयमः"**। गुप्तेन्द्रियरूप उपस्थ का संयम ।

5. **अपरिग्रह-** **"विषयाणामर्जनरक्षणक्षयसङ्गहिंसादोषदर्शनादस्वीकरणम परिग्रह"**। अर्जन, रक्षण, क्षय, सङ्ग और हिंसा विषयक इन पाँच प्रकार के दोषों को देखकर उनका ग्रहण न करना ही अपरिग्रह है।

8209837844

www.ugc-net.com

(2) नियम

"शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः"।

नियम पाँच हैं-

1. शौच 2. सन्तोष 3. तप 4. स्वाध्याय 5. ईश्वरप्रणिधान

1. **शौच- "शौचं मृज्जलादिजनितं मेध्याभ्यवहरणादि च बाह्यम्, आभ्यन्तरं-चित्तमलानामाक्षालनम्"।** मिट्टी और जल से जनित तथा मेध्य आहार इत्यादि शौच बाह्य होते हैं। आभ्यन्तर शौच चित्तमल का क्षालन है।

2. **सन्तोष- "सन्तोषः सन्निहितसाधनादिकस्यानुपादित्सा"।** केवल प्राणधारणयोग्य उपलब्ध साधन से अधिक साधन के ग्रहण की इच्छा न होना सन्तोष है।

3. **तप- "तपो द्वन्द्वसहनम्"।** भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, इत्यादि व्रत समूह व्रत कहलाते हैं।

4. **स्वाध्याय- "स्वाध्यायो मोक्षशास्त्राणामध्ययनं प्रणवजपो वा"।** मोक्षशास्त्राध्ययन अथवा प्रणवजप ही स्वाध्याय है।

5. **ईश्वरप्रणिधान- "ईश्वरप्रणिधानं तस्मिन् परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्"।** परम गुरु ईश्वर में सभी कर्म अर्पण करना ईश्वरप्रणिधान है।

"शय्यासनस्थोऽथ पथि व्रजन् वा स्वस्थः परिक्षीणवित्तर्कजालः।
संसारबीजक्षयमीक्षमाण स्यान्नित्यमुक्तोऽमृतभोगभागी"॥

8209837844

www.ugc-net.com

योगाङ्गों के प्रतिष्ठित हो जाने पर फल-

(1) यम-

1. **अहिंसा** - **"अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः"**। अहिंसा के प्रतिष्ठित हो जाने पर तत्सन्निधि में प्राणी 'निर्वैर' होते हैं।
2. **सत्य**- **"सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्"**। सत्य प्रतिष्ठित हो जाने पर वाक्य 'क्रियाफ़लाश्रयत्व' गुण से युक्त होता है।
3. **अस्तेय**- **"अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्"**। अस्तेय की प्रतिष्ठा होने से 'सर्वरत्न' उपस्थित होते हैं।
4. **ब्रह्मचर्य**- **"ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः"**। ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा होने पर 'वीर्यलाभ' होता है।
5. **अपरिग्रह**- **"अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः"**। अपरिग्रहस्थैर्य से 'जन्मकथन्ता' भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान होता है।

(2) नियम-

1. **शौच**- **"शौचात् स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः"**। शौच के प्रतिष्ठित हो

8209837844

www.ugc-net.com

योगाङ्गों के प्रतिष्ठित हो जाने पर फल-

(1) यम-

1. **अहिंसा** - **"अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः"**। अहिंसा के प्रतिष्ठित हो जाने पर तत्सन्निधि में प्राणी 'निर्वैर' होते हैं।
2. **सत्य**- **"सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्"**। सत्य प्रतिष्ठित हो जाने पर वाक्य 'क्रियाफ़लाश्रयत्व' गुण से युक्त होता है।
3. **अस्तेय**- **"अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्"**। अस्तेय की प्रतिष्ठा होने से 'सर्वरत्न' उपस्थित होते हैं।
4. **ब्रह्मचर्य**- **"ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः"**। ब्रह्मचर्य की प्रतिष्ठा होने पर 'वीर्यलाभ' होता है।
5. **अपरिग्रह**- **"अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः"**। अपरिग्रहस्थैर्य से 'जन्मकथन्ता' भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान होता है।

(2) नियम-

1. **शौच**- **"शौचात् स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः"**। शौच के प्रतिष्ठित हो

8209837844

ww.ugc-net.com

(2) नियम-

1. **शौच-** **"शौचात् स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः"**। शौच के प्रतिष्ठित हो जाने से अपने शरीर में घृणा और पर के साथ संसर्ग की अनिच्छा होती है। **"सत्त्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रियजयात्मदर्शनयोग्यत्वानि च"**। सत्त्वशुद्धि, सौमनस्य, ऐकाग्र्य, इन्द्रियजय तथा आत्मदर्शनयोग्यत्व की सिद्धि होती है।

2. **सन्तोष-** **"सन्तोषादनुत्तमसुखलाभः"**। सन्तोष से अनुत्तम सुख का लाभ होता है।

"यच्च कामसुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम्।
तृष्णाक्षयसुखस्यैते मार्हतः षोडशीं कलाम्"॥

3. **तप-** **"कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात् तपसः"**। तपाचरण से अशुद्धि का क्षय होने के कारण कायेन्द्रिय सिद्धि होती है।

4. **स्वाध्याय -** **"स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः"**। स्वाध्याय से इष्ट देवता के साथ मिलन होता है।

5. **ईश्वरप्रणिधान-** **"समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्"**। ईश्वरप्रणिधान से समाधि सिद्ध होती है।

8209837844 www.ugc-net.com

(3) आसन

"स्थिरमुखमासनम्"। निश्चल और सुखावह उपवेशन ही आसन है । **जैसे-** पद्मासन, वीरासन, भद्रासन, स्वस्तिकासन, पंडासन, सोपाश्रय, पर्यंक, क्रौञ्चनिषदन, हस्तिनिषदन, उष्ट्रनिषदन, समसंस्थान इत्यादि स्थिरसुख अर्थात् यथासुख होने से आसन कहे जाते हैं ।

आसनसिद्धि-"प्रयत्नशैथिल्यानन्तसमापत्तिभ्याम्"। 'प्रयत्नशैथिल्य' और 'अनन्तसमापत्ति' के द्वारा आसन की सिद्धि होती है ।

"ततो द्वन्द्वानभिघातः"। आसन सिद्धि से द्वन्द्वाभिघात नहीं होता है ।

8209837844

www.ugc-net.com

(4) प्राणायाम

"तस्मिन्सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः"। आसन की सिद्धि होने के पश्चात् श्वासप्रश्वास का गतिविच्छेद ही प्राणायाम है ।

''बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्तिर्देशकालसङ्ख्याभिः परिदृष्टो दीर्घसूक्ष्मः"। वह प्राणायाम 'बाह्यवृत्ति', 'आभ्यन्तरवृत्ति' और 'स्तम्भवृत्ति' होता है ।

बाह्यवृत्ति/रेचक - "यत्र प्रश्वासपूर्वको गत्यभावः स बाह्यः"। जिसमें प्रश्वासपूर्वक गत्यभाव है वह बाह्यवृत्तिक प्राणायाम है ।

आभ्यन्तर/पूरक- "यत्र श्वासपूर्वको गत्यभावः स आभ्यन्तरः"। जिसमें श्वासपूर्वक गत्यभाव है वह आभ्यन्तर वृत्तिक है ।

स्तम्भवृत्ति/कुम्भक- "स्तम्भवृत्तिर्यत्रोभयाभावः सकृत्प्रयत्नाद्भवति"। जिसमें बाह्य और आभ्यन्तर दोनों वृत्ति का अभाव होता है, वह स्तम्भवृत्तिक प्राणायाम होता है, और वह एककालीन प्रयत्न द्वारा होता है ।

केवलकुम्भक-''बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी चतुर्थः"। बाह्य तथा आभ्यन्तर विषय का आक्षेपक चतुर्थ प्राणायाम होता है ।

8209837844 www.ugc-net.com

(5) प्रत्याहार

"स्वविषयासम्प्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः"। स्व विषय के साथ संयुक्त होने पर इन्द्रियों का जो स्वरूपानुकार होता है, इन्द्रियों का प्रत्याहार भी उसी प्रकार का होता है । **यथा- "मधुकरराज-मक्षिका उत्पतन्तमनुत्पतन्ति निविशमानमनु निविशन्ते। तथेन्द्रियाणि चित्तनिरोधेनिरुद्धानि इत्येष प्रत्याहार:"।** जिस प्रकार उड़ती हुई रानी मक्षिका के पीछे अन्य मधुवायी मक्षिकाएं भी उड़ती हैं और उसके बैठने पर बैठ जाती है, उसी प्रकार इन्द्रियगण भी चित्तनिरोध होने पर निरुद्ध होते हैं, यही प्रत्याहार है ।

"ततः परमा वश्यतेन्द्रियाणाम्"। प्रत्याहार की सिद्धि से इन्द्रियसमूह की परमावश्यता होती है ।

8209837844 www.ugc-net.com

(6) धारणा

"देशबन्धश्चित्तस्य धारणा"। देश में बन्ध होना ही चित्त की धारणा है। यथा- 'नाभिचक्रे, हृदयपुण्डरीके.....'। नाभिचक्र, हृदयपुण्डरीक, मूर्द्धज्योति, नासिकाग्र, जिह्वाग्र, इत्यादि देश में बन्ध होना अथवा बाह्य विषय का जो वृत्तिमात्र के द्वारा बन्ध है, वही धारणा है ।

(7) ध्यान

"तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्"। उस धारणा में प्रत्यय (ज्ञानवृत्ति) की एकतानता ध्यान है ।

8209837844

www.ugc-net.com

(8) समाधि

"तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः"। ध्येयाकारनिर्भास ध्यान ही जब ध्येयस्वभावावेश से अपने ज्ञानात्मक स्वभावशून्य के समान होता है, तब उसे समाधि कहते हैं ।

''त्रयमेकत्र संयमः"। (ये तीनों संयम कहे जाते हैं।)

"तज्जयात् प्रज्ञालोकः"।। (संयम को जीतने से प्रज्ञा का प्रकाश होता है।)

'वैशारद्यकाल' में **'विशिष्टप्रज्ञा'** उत्पन्न होती है जिसका नाम **'ऋतम्भरा'** है, वह **"अन्वर्थनामा"** होती है ।

"आगमेनानुमानेन ध्यानाभ्यासरसेन च।
त्रिधा प्रकल्पयन्प्रज्ञां लभते योगमुत्तमम्"

समाधि के दो प्रकार-

1. सम्प्रज्ञात
2. असम्प्रज्ञात

(1) सम्प्रज्ञात-

"वितर्कविचारानन्दास्मितारूपानुगमात् संप्रज्ञातः"।

8209837844 www.ugc-net.com

सम्प्रज्ञात समाधि के चार प्रकार-

1. वितर्क - "वितर्कश्चित्तस्यालम्बने स्थूल आभोग:"।
2. विचार - "सूक्ष्मो विचार:"।
3. आनन्द - "आनन्दो आह्लाद:"।
4. अस्मिता - "एकात्मिका संविदस्मिता"।

8209837844

www.ugc-net.com

(2) असम्प्रज्ञात-

"विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोऽन्यः"। विराम (सब प्रकार की आलम्बन वृत्ति के निरोध) के कारणभूत परवैराग्य के अभ्यास द्वारा साध्य संस्कार शेष रूप समाधि असम्प्रज्ञात है ।

"भवप्रत्ययो विदेहप्रकृतिलयानाम्"। विदेह देवताओं और प्रकृति तीनों को **'भव'** नामक असम्प्रज्ञात समाधि होती है ।

"श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम्"। योगियों को **'उपाय'** प्रत्यय नामक असम्प्रज्ञात समाधि होती है । **श्रद्धा-** अभिरुचि, **वीर्य-** उत्साह, **स्मृति-** ध्यान, **समाधि-** समाहित, **प्रज्ञा-** विवेकज्ञान ।

"तीव्रसंवेगानामासन्नः"। **"मृदुमध्याधिमात्रत्वात् ततोऽपि विशेषः"**। योगी मृदुमात्र व अधिमात्र उपायों के भेद से नौ प्रकार के होते हैं ।

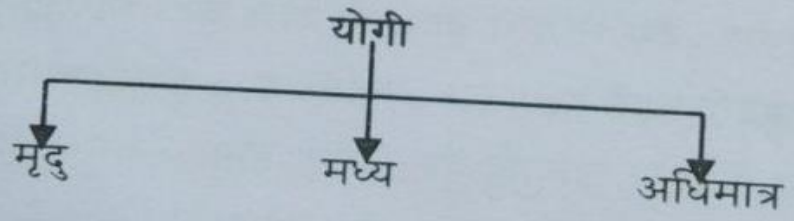

"ईश्वरप्रणिधानाद्वा"। ईश्वर प्रणिधान से भी असम्प्रज्ञात समाधि होती है।

क्रियायोग- "तपः स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानानि-क्रियायोगः"॥

अर्थात् क्रियायोग के तीन पक्ष है

1 तप, 2 स्वाध्याय , 3 ईश्वर प्रणिधान योग ।

Next class....

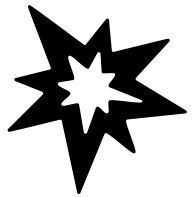 Unit - 5 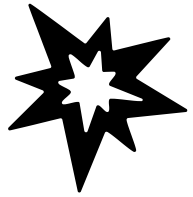

Home work Question....

31. योगदर्शनानुसारेण कति यमाः ?

(A) अष्टौ (B) पञ्च

(C) दश (D) सप्त

32. योगाङ्गेषु कति नियमाः कथिताः?

(A) पंच (B) नव

(C) दश (D) सप्त

FEEDBACK

- आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information....

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

जिसने भी खुद को खर्च किया है,
DUNIYA ने उसी को GOOGLE पर SEARCH किया है।।
www.fillerform.com
fillerform
2

THANK YOU